हिन्द महासागर में रूस की समुद्री कार्यनीतियाँ

*डॉ. इंद्राणी तालुकदार**

रूस पर अत्यधिक वैश्विक दबाव ने इस देश को वैश्विक स्तर पर अधिक मुखर बना दिया है। यूक्रेन के संकट के मद्देनजर लागू की गई प्रतिबंध व्यवस्था ने इसकी अर्थव्यवस्था में गिरावट ला दी और रूसी लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। तेल, जिस पर रूस अत्यधिक निर्भर है, की कीमतों में गिरावट और अत्याधुनिक पश्चिमी प्रौद्योगिकी, जिसका विस्तार हाइड्रोकार्बन के निष्कर्षण से लेकर नागर विमान उत्पादन तक है, पर प्रतिबंध ने घरेलू हलकों में पुतिन के नेतृत्व पर मूक सवाल खड़े कर दिए हैं। इन सम्मिलित दबावों ने रूस को वैश्विक मुद्दों पर अधिक दृढ़ रुख अपनाने पर मजबूर कर दिया। भले ही जी-20 शिखर सम्मेलन में पुतिन के भाग लेने का विरोध हुआ, लेकिन रूसी राष्ट्रपति ने इसमें भाग लेना पसंद किया। शिखर वार्ता के दौरान, एक रूसी युद्धपोत को आस्ट्रेलिया के प्रवाल सागर में तैनात किया गया था। इसे रूस की ओर से धमकी भरी कार्रवाई के रूप में देखा गया। सभी हलकों के विश्लेषकों ने अटकलें लगानी शुरू कर दी हैं कि कहीं यह शीत युद्ध की वापसी तो नहीं है। एक उभरता रूस और प्रतिरोधी पश्चिम चर्चा के प्रमुख बिन्दु थे। पूर्व सोवियत राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचेव ने भी अपने एक भाषण में इस शीत युद्ध की वापसी के संबंध में संकेत दिए।

यूक्रेनिया का संकट, नाटो की सक्रिय संलग्नता, आर्थिक प्रतिबंध और अमरीका के साथ अपने संबंधों के सबसे खराब दौर में पहुंचना - इन सभी कारकों ने रूस को एशियाई क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए मजबूर कर दिया है ताकि इसकी अर्थव्यवस्था का जीर्णोद्धार

किया जा सके। हालांकि रूस, अमेरिका की पहल पर, एक स्वस्थ और सकारात्मक संबंध के लिए वर्ष 2008 में एक 'रीसेट' नीति पर तैयार हो गया था, लेकिन प्रतिस्पर्धा की छिपी प्रवृत्ति की अनदेखी नहीं की जा सकती। उपर्युक्त सभी तथ्यों/कारकों ने मिलकर रूस को अपना ध्यान पश्चिम से हटाकर पूर्व की ओर लगाने की गति तेज करने के लिए प्रेरित किया है।

पिछले छह महीनों में रूसी नौसेना की गतिविधियां, जैसेकि 'कोमोडो 2014' नामक समुद्री अभ्यास, जो 28 मार्च से 3 अप्रैल, 2014 तक चला और जो कृत्रिम आपदा राहत युद्धाभ्यास पर केन्द्रित था; रूसी नौसैनिक पोत/जहाज 'मोस्क्वा' का पुनःपूर्ति तथा सद्भावना यात्रा पर कोलम्बो पत्तन पर आना; अक्तूबर, 2014 में अरब सागर में पाकिस्तान तथा रूस की नौसेनाओं का एक संयुक्त नौसैनिक मादक द्रव्य-विरोधी अभ्यास का आयोजन करना; और इंडोनेशिया के समुद्री (व्यावसायिक) क्षेत्र को सहयोग देने के लिए विभिन्न प्रकार की आधुनिक प्रौद्योगिकी की रूस की पेशकश, ऐसे कुछ उदाहरण हैं जो इस क्षेत्र में रूस के पांव जमाने के महत्वपूर्ण उभरते संकेत हैं।

वर्ष 2000 के बाद, ब्लादिमीर पुतिन के नेतृत्व में रूस ने विश्व के सभी क्षेत्रों तक सैन्य तथा आर्थिक रूप से अपनी पहुंच/उपस्थिति का विस्तार करने के सुनिश्चित मार्ग की रूपरेखा पहले से ही तैयार कर ली थी। वर्ष 2001 में प्रकाशित 'रूसी संघ के समुद्री सिद्धांत 2020' दस्तावेज़ में, रूस ने राष्ट्रीय समुद्र नीति के प्रमुख क्षेत्रीय स्थलों के रूप में अटलांटिक, आर्कटिक, प्रशांत, कैस्पियन और हिन्द महासागर का सीमांकन किया। यह नीति उनके विशिष्ट विशेषताओं/लक्षणों के आधार पर तैयार की गई है। हिंद महासागर के संबंध में, अपने आर्थिक हितों के अलावा भी, रूस ने इस क्षेत्र में अपनी स्थिति संरक्षित रखने तथा सुदृढ़ करने के अपने इरादे स्पष्ट कर दिए हैं। हिन्द महासागर में अपनी सैन्य उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए रूस आवर्ती/आवधिक आधार पर हिन्द महासागर को शांति, स्थिरता और अच्छे मित्रतापूर्ण संबंधों पर आधारित क्षेत्र के रूप में बदलने की आकांक्षा रखता है। जैसाकि रूस के विदेश नीति दस्तावेज में उल्लेख किया गया है, रूस ने वैश्विक शक्ति तथा विकासात्मक क्षमता के पूर्व की ओर, विशेषकर एशिया-प्रशांत क्षेत्र, हिंद महासागर क्षेत्र और आर्कटिक क्षेत्र की ओर खिसकने को भांप लिया।

रूस के भारत, बांग्लादेश, म्यांमार और वियतनाम जैसे एशियाई देशों के साथ अपने हथियार निर्यात सौदों के माध्यम से पूर्व सोवियत संघ के समय से ही मजबूत द्विपक्षीय संबंध थे। तथापि, विदेश नीति दस्तावेज में यथानिर्धारित अपने दीर्घकालिक उद्देश्य के मामले में राष्ट्रपति पुतिन ने इस क्षेत्र में रूस के हितों पर जोर देने के लिए जून 2013 में 'एशिया की धुरी' शब्द का प्रयोग किया। इसके परिणामस्वरूप, पिछले कुछ वर्षों से रूस इस क्षेत्र में समुद्री व्यवसायों सहित अपनी महत्वकांक्षा का सक्रियता से प्रसार कर रहा है और अपनी गतिविधियां बढ़ा रहा है।

इस संदर्भ में, रूस द्वारा एशियाई देशों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने को इस क्षेत्र में इसकी भू-राजनीतिक पैठ बनाने की पहल के रूप में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, रूस वियतनाम को दक्षिण-पूर्व एशिया की महत्वपूर्ण धुरी मानता है क्योंकि मलक्का जलडमरूमध्य को उत्तर-पूर्व एशिया के साथ जोड़ने वाले प्रमुख समुद्रतट सीमारेखा पर उसका कब्जा है। इस देश से रूस के सुदूर पूर्व पत्तनों तक पहुंचा जा सकता है। मास्को भारत के साथ अतीत के अपने रिश्तों को पुन: कायम करने और पाकिस्तान जैसे देशों के साथ नए संबंध स्थापित करने के महत्व को भी बखूबी समझता है।

इस क्षेत्र में भारत की भू-रणनीतिक स्थिति आर्थिक तथा समुद्री शक्ति स्थापित करने हेतु रूस का प्रवेश-द्वार है। वर्ष 2003 के बाद से भारत के साथ पांच संयुक्त अभ्यासों में इसकी भागीदारी, जिसे इंद्र परियोजना के नाम से जाना जाता है, हिन्द महासागर में रूसी गतिविधियों के उदाहरण माने जाते हैं। इस बीच, पाकिस्तान के साथ रिश्ते की शुरुआत के पीछे लक्ष्य कराची बंदरगाह है। हिन्द महासागर में किसी अभियान के दौरान विश्राम स्थल के रूप में इस पत्तन की उपलब्धता और भविष्य में, अपनी ऊर्जा पाइपलाइनों को पाकिस्तान के ग्वादर पत्तन के रास्ते इस क्षेत्र के बाकी हिस्सों (पूर्वी और पश्चिमी) से जोड़ना पाकिस्तान के साथ रिश्ते बनाने का इसका मूल उद्देश्य है।

हिंद महासागर क्षेत्र बढ़ते क्षेत्रीय सैन्यकरण की नई प्रवृत्ति का साक्षी बन रहा है, जो रूस को अपनी संपन्न नौसैन्य प्रौद्योगिकी तथा विमान निर्माण तकनीक को भुनाने का अच्छा अवसर

प्रदान करता है, जो इसे अपनी आर्थिक और सैन्य शक्ति बढ़ाने में मदद कर सकता है। यह हिन्द महासागर में सुरक्षा गतिशीलता/सक्रियता में गहरी रुचि दिखा रहा है और इस क्षेत्र में रूसी नौसेना की मौजूदगी दूरस्थ समुद्री अभियानों में भागीदारी और समुद्री दस्तावेज़, 2020 में उल्लिखित अपने उद्देश्यों को पूरा करने की इसकी महत्वाकांक्षा को प्रदर्शित करता है।

इन देशों के साथ ऊर्जा और हथियार निर्यात के माध्यम से आर्थिक सहयोग के बढ़ते कार्यकलाप और नौसैनिक अभ्यास, आदि के माध्यम से सैन्य संपर्कों की बढ़ती गतिविधियां बदले में रूसी नौसेना के लिए पत्तन उपलब्धता प्रदान करेगी। इन गतिविधियों के पीछे औचित्य अमरीका जैसी अन्य शक्तियों से संतुलन कायम करना भी है जिनकी महत्वाकांक्षा मास्को की अपेक्षाओं को ध्वस्त कर सकती है।

इसलिए, मास्को अमरीका से संतुलन कायम करने का कोई भी अवसर नहीं छोड़ना चाहेगा और एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में आर्कटिक क्षेत्र के साथ-साथ एशिया अगली युद्ध स्थली बन सकता है। रूस अपने मौजूदा सहयोगियों के साथ अपनी भागीदारी मजबूत करेगा और अन्य (राष्ट्रों) के साथ नए सहयोग कायम करेगा। यह एशियाई देशों के साथ परस्पर सहयोग के उद्देश्य की प्राप्ति का प्रयास करेगा, लेकिन यदि इसे (रूस को) नियंत्रित/सीमित करने हेतु इसकी महत्वाकांक्षाओं पर (इन देशों के साथ) अमरीकी रणनीतियों द्वारा कुठाराघात होता है, तो हिन्द महासागर क्षेत्र सक्रिय सैन्यकरण का साक्षी बन सकता है, जैसाकि आर्कटिक सागर में देखा गया। अत:, एशियाई देशों, विशेषकर भारत को हिन्द महासागर क्षेत्र को अस्थिरता से बचाने के लिए दोनों शक्तियों के बीच कुशलतापूर्वक संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता है।

डॉ. इंद्राणी तालुकदार विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली में अनुसंधान अध्येता हैं।